सूरह — एक कहानी

सूरह अल-हाक़्क़ा

यक़ीनी हक़ीक़त

पूरा सफ़र — वो हक़ीक़त जो हमेशा आ कर रहती है —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 69 • 52 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

अल्-हाक़्क़ह। मल्-हाक़्क़ह
1-2. यक़ीनी हक़ीक़त! वो यक़ीनी हक़ीक़त क्या है?

व त'इयहा उज़ुनुंव्-वा'इयह
12. और ताकि याद रखने वाला कान उसे याद रखे।

यौम-इज़िन तु'रज़ून ला तख़्फ़ा मिन्कुम ख़ाफ़ियह
18. उस दिन तुम पेश किए जाओगे, तुम्हारा कोई राज़ छुपा न रहेगा।

हा-उमुक़्-र-ऊ किताबियह
19. लो, मेरा नामा-ए-अमल पढ़ो!

इन्नहू कान ला यु'मिनु बिल्लाहिल्-'अज़ीम
33. बेशक वो अल्लाह अज़ीम पर ईमान नहीं रखता था।

व ला यहुद्दु 'अला त'आमिल्-मिस्कीन
34. और वो मिस्कीन को खिलाने पर उभरता नहीं था।

एक नाम जो ख़ुद एक ख़ुत्बा है

बेटा, इस सूरह का नाम ही इसका पूरा पैग़ाम है। **अल-हाक़्क़ा** — हक़्क़ से, सच — का मतलब है 'वो जो वुक़ूअ पज़ीर हो कर रहे, जो लाज़मी तौर पर सच हो कर रहे, वो हक़ीक़त जो हर बहस को तय कर देती है।'

और देखिए ये कैसे शुरू होती है — तीन छोटी, हथौड़े की तरह चोट करती लाइनों से: 'अल्-हाक़्क़ह। मल्-हाक़्क़ह। व मा अद्राक मल्-हाक़्क़ह?' — यक़ीनी हक़ीक़त! वो यक़ीनी हक़ीक़त क्या है? और आपको क्या मालूम कि वो यक़ीनी हक़ीक़त क्या है?

बेटा, अरबी में ये बेहद अहमियत का अंदाज़ है। ये ऐसा है जैसे कोई कमरे में भागता हुआ आए और कहे: 'वो सैलाब! कैसा सैलाब? और क्या तुम जानते भी हो कि वो सैलाब क्या है?' तिकरार मालूमात के लिए नहीं; ये दिल को आगे झुकाने के लिए है।

और फिर, उस दिन को बयान करने से पहले, सूरह तारीख़ से गवाह बुलाती है — वो

क़ौमें जिन्होंने भी मान लिया था कि 'बाद' कभी नहीं आएगा।

वो क़ौमें जिन्होंने ख़ुद को दाइमी समझा

'समूद और 'आद ने खटखटाने वाली आफ़त को झुठलाया।' दो अज़ीम तहज़ीबें, बेटा, और हर एक अल्लाह के एक अलग हथियार से ख़त्म की गई — क्योंकि उन के पास कभी ज़रियों की कमी नहीं।

'समूद का हाल ये कि वो हद से बढ़ने वाली चिंघाड़ से हलाक किए गए' — एक आवाज़। एक आवाज़, और वो क़ौम जो पहाड़ों में अपने घर तराशती थी, ख़त्म।

'और 'आद का हाल ये कि वो एक चीख़ती, तुंद हवा से हलाक किए गए, जिसे अल्लाह ने उन पर **सात रातों और आठ दिनों** तक लगातार मुसल्लत किया।' बेटा, तफ़्सील ग़ौर कीजिए: अल्लाह हमारे लिए रातें और दिन गिनते हैं। कोई अचानक चोट नहीं — एक ना-रुकने वाला, मुसलसल पूरे हफ़्ते का हवा का अज़ाब, ताकि अपने दौर के सबसे ताक़तवर लोग अपनी बे-बसी को पूरी तरह महसूस करने का वक़्त पाएँ।

'तो तुम लोग उन्हें उस में गिरे हुए देखते, गोया वो खोखले खजूर के तने हों।' क्या तस्वीर है: 'आद अपनी बे-इंतिहा जिस्मानी ताक़त के लिए मशहूर थे — क़ुरआन कहीं और उनका दावा दर्ज करता है, 'हमसे ज़्यादा ज़ोर-आवर कौन है?' और यहाँ वो उन खजूर के तनों की तरह पड़े हैं जो बाहर से बड़े लगते हैं मगर अंदर से खोखले हैं। बेटा, ये हर उस ताक़त का कतबा है जो ईमान के बग़ैर बनी हो: बाहर से मुतअस्सिर कुन, अंदर से ख़ाली।

फिर: 'फ़-हल तरा लहुम मिम्-बाक़ियह — क्या तुम्हें उनका कोई निशान भी नज़र आता है?'

और फिर, बेटा, एक ऐसी आयत आती है जो **आप** को ज़ाती तौर पर इस क़दीम तारीख़ से बाँध देती है: 'इन्ना लम्मा तग़ल्-मा-उ हमल्नाकुम फ़िल्-जारियह — बेशक जब पानी हद से बढ़ गया, तो **हमने तुम्हें** चलती कश्ती में उठाया — लि-

नज्'अलहा लकुम तज़्किरतंव्-व त'इयहा उज़ुनुंव्-वा'इयह — ताकि उसे तुम्हारे लिए एक याद-दहानी बनाएँ, और ताकि एक याद रखने वाला कान उसे याद रखे।'

'हमने **तुम्हें** उठाया', बेटा — तुम्हें, जो आज इसे पढ़ रहा है। क्योंकि हर ज़िंदा इंसान उन लोगों की नस्ल से है जो नूह (अलैहि0) के साथ उस कश्ती में बचाए गए। आपका वुजूद ख़ुद एक ऐसे बचाव की सनद है जो तारीख़ के शुरू होने से पहले हुआ। ये एहसान-मंदी का एक ऐसा क़र्ज़ है जो आपके हर दूसरे क़र्ज़ से पुराना है।

और वो ख़ूबसूरत जुमला देखिए: 'उज़ुनुन वा'इयह' — एक याद रखने वाला कान, एक ऐसा कान जो सुनी हुई बात को **थामे** रखे, गुज़रने न दे। बेटा, उस कान की दुआ कीजिए। बहुत लोग क़ुरआन सुनते हैं; चंद उसे थामे रखते हैं।

एक फूँक, और सब कुछ ख़त्म

फिर सूरह ख़ुद उस दिन की तरफ़ बढ़ती है: 'फ़-इज़ा नुफ़िख़ फ़िस्-सूरि नफ़्ख़तुंव्-वाहिदह — फिर जब सूर में एक फूँक मारी जाएगी।' एक, बेटा। कोई लश्कर नहीं, कोई जंग नहीं — सूर में एक फूँक, और मख़लूक़ का पूरा निज़ाम पिघल जाएगा।

'और ज़मीन और पहाड़ उठाए जाएँगे और एक ही चोट में रेज़ा रेज़ा कर दिए जाएँगे। फ़-यौम-इज़िंव्-वक़'अतिल्-वाक़ि'अह — तो उस दिन वो वाक़िआ हो जाएगा। वन्शक़्क़तिस्-समा-उ फ़-हिय यौम-इज़िंव्-वाहियह — और आसमान फट जाएगा, क्योंकि उस दिन वो बोदा होगा।' वो आसमान, बेटा — वो छत जिसे इसी क़ुरआन ने कहा था कि इसमें कोई झोल नहीं — उस दिन 'वाहियह' कहा गया, फटते हुए पुराने कपड़े जैसा बोदा।

'और फ़रिश्ते उसके किनारों पर होंगे। व यह्मिलु 'अर्श रब्बिक फ़ौक़हुम यौम-इज़िन समानियह — और उस दिन आपके रब का अर्श उन के ऊपर **आठ** (फ़रिश्ते) उठाए होंगे।'

'यौम-इज़िन तु'रज़ून, ला तख़फ़ा मिन्कुम ख़ाफ़ियह — उस दिन तुम फ़ैसले के लिए पेश किए जाओगे; तुम्हारा कोई राज़ छुपा न रहेगा।' हर चीज़, बेटा — वो पोशीदा मैसेज,

वो छुपी नीयत, वो बात जो किसी को पता नहीं थी — सब ज़ाहिर। अभी ऐसे जिए कि उस नुमाइश में बचा रहे।

आओ — मेरा नामा पढ़ो!

और अब, बेटा, वो मंज़र जिसकी तरफ़ ये पूरी सूरह बढ़ रही थी — इसे याद कर लीजिए, क्योंकि ये एक मुज़ब्बित ज़िंदगी के लिए क़ुरआन का सबसे बेहतरीन महरिक है।

'फ़-अम्मा मन ऊतिय किताबहू बि-यमीनिही — तो जिसे उसका नामा उसके दाएँ हाथ में दिया गया — फ़-यक़ूलु हा-उमुक़्-र-ऊ किताबियह — वो कहेगा: **लो! आओ और मेरा नामा पढ़ो!**'

बेटा, तसव्वुर कीजिए। एक आदमी अपनी ज़िंदगी की मुकम्मल फ़ाइल पाता है — हर लफ़्ज़, हर नज़र, हर तन्हाई का लम्हा — और उसका रद्द-ए-अमल उसे छुपाना नहीं। वो पूरी इंसानियत के मजमे में दौड़ता है, उसे उठाए हुए, सब को पुकारता हुआ: इसे पढ़ो! राहत और ख़ुशी इतनी बे-इंतिहा है कि वो **चाहता है** कि दुनिया देखे।

उसका राज़ क्या था? वो ख़ुद अगली ही लाइन में बताता है: 'इन्नी ज़नन्तु अन्नी मुलाक़िन हिसाबियह — बेशक मुझे यक़ीन था कि मैं अपने हिसाब से मिलूँगा।' बस इतना ही, बेटा। उसने अपनी पूरी ज़िंदगी ये जानते हुए गुज़ारी कि ये फ़ाइल एक दिन खोली जाएगी — इसलिए उसने इसे एहतियात से लिखा। **वो हिसाब देते हुए जिया, इसलिए हिसाब देते हुए पहुँचा।**

और उसका अज्र: 'फ़-हुव फ़ी 'ईशतिर्-राज़ियह — तो वो पसंदीदा ज़िंदगी में होगा — फ़ी जन्नतिन 'आलियह — एक बुलंद बाग़ में — क़ुतूफ़ुहा दानियह — जिसके फलों के गुच्छे नीचे झुके हुए', उसकी तरफ़ खिंचे हुए। और फिर क़ुरआन की सबसे मीठी दावत: 'कुलू वश्रबू हनी-अम्-बिमा अस्लफ़्त्तुम फ़िल्-अय्यामिल्-ख़ालियह — खाओ और पियो ख़ुशगवारी से, उस के बदले जो तुमने **गुज़रे हुए दिनों** में आगे भेजा।' बेटा — 'गुज़रे हुए दिन' यही दिन हैं। अभी, इस वक़्त, आप वो दिन जी रहे हैं जिनका उस दिन ज़िक्र होगा।

और फिर दूसरा आदमी: 'मगर जिसे उसका नामा उसके बाएँ हाथ में दिया गया, वो कहेगा: या लैतनी लम ऊत किताबियह — काश मुझे मेरा नामा दिया ही न जाता — या लैतहल्-क़ादियह — काश वही (मौत) ख़ात्मा होती! मा अग़ना 'अन्नी मालियह — मेरा माल मेरे कुछ काम न आया — हलक 'अन्नी सुल्तानियह — मेरी ताक़त मुझ से जाती रही।'

बेटा, दोनों आदमी अपने अपने अल्फ़ाज़ के साथ नक़ल किए गए — एक ख़ुशी से चीख़ता हुआ, एक अदम-वुजूद की तमन्ना करता हुआ। एक ही दिन, एक ही फ़ाइल का निज़ाम; दो उम्रों के चुनाव।

दो जुर्म, हमेशा साथ साथ

और फिर हुक्म: 'इसे पकड़ो और तौक़ डालो, फिर भड़कती आग में डालो, फिर एक ऐसी ज़ंजीर में पिरो दो जिसकी लंबाई सत्तर हाथ है।'

और अल्लाह उसके जुर्म का नाम लेते हैं — सिर्फ़ **दो**, बेटा, और ग़ौर कीजिए कौन से दो: 'इन्नहू कान ला यु'मिनु बिल्लाहिल्-'अज़ीम — बेशक वो अल्लाह, सबसे अज़ीम पर ईमान नहीं रखता था — व ला यहुद्दु 'अला त'आमिल्-मिस्कीन — **और वो मिस्कीन को खिलाने पर उभरता नहीं था।**'

बेटा, इस जोड़ी को देखिए, क्योंकि क़ुरआन इसे बार बार दोहराता है: अल्लाह के साथ टूटा हुआ ताल्लुक़, और उसकी मख़लूक़ की तरफ़ बंद मुट्ठी। और देखिए कितनी बारीकी से अल्फ़ाज़ चुने गए: ये कहता भी नहीं कि 'उसने मिस्कीन को खिलाया नहीं' — ये कहता है कि उसने मिस्कीन को खिलाने पर **उभारा** नहीं। उभारने का एक लफ़्ज़ तक नहीं! 'भाई, उस आदमी की मदद करो' तक नहीं। एक आदमी ख़ुद ग़रीब हो सकता है और फिर भी इस जुर्म से पाक हो सकता है, सिर्फ़ दूसरों को भलाई की तरफ़ उभारने से।

तो अपने आप से पूछिए, बेटा: अपने ख़ानदान में, अपने दफ़्तर में, अपने दोस्तों के हल्क़े में — क्या मैं उन में से हूँ जो भूकों को खिलाने पर **उभारते** हैं? क्या मैं कमज़ोरों के लिए उस वक़्त बोलता हूँ जब गुफ़्तगू सर्द हो जाती है?

एक अमानतदार रसूल की दलील

और फिर सूरह उस पैग़ाम के मंबा का दिफ़ा करती है, और वो एक ऐसे तर्ज़ में करती है जो हिला देता है।

'फ़-ला उक़्सिमु बिमा तुब्सिरून व मा ला तुब्सिरून — तो मैं क़सम खाता हूँ उसकी जो तुम देखते हो और उसकी जो तुम नहीं देखते — इन्नहू ल-क़ौलु रसूलिन करीम — बेशक ये एक इज़्ज़त वाले रसूल का कलाम है — व मा हुव बि-क़ौलि शा'इर — और ये किसी शायर का कलाम नहीं — क़लीलम्-मा तु'मिनून — तुम कितना कम ईमान लाते हो! व ला बि-क़ौलि काहिन — और न किसी काहिन का कलाम — क़लीलम्-मा तज़क्करून — तुम कितना कम नसीहत पकड़ते हो! तन्ज़ीलुम्-मिर्-रब्बिल्-'आलमीन — ये रब्बुल आलमीन की तरफ़ से उतारा हुआ है।'

बेटा, ग़ौर कीजिए कि मक्का के दो सबसे आम इल्ज़ामों को नाम ले कर रद्द किया गया: शायर और काहिन। क्योंकि उनके पास कोई तीसरी वज़ाहत थी ही नहीं — वो जानते थे कि ये किसी आम इंसान का कलाम नहीं हो सकता, तो उन्होंने वो दो ख़ाने आज़माए जो उन्हें आते थे, और दोनों बे-ठिकाने थे।

और फिर, बेटा, एक ऐसी आयत जो इस किताब की सच्चाई पर सबसे सख़्त क़सम है: 'व लौ तक़व्वल 'अलैना ब'अ्ज़ल्-अक़ावील — और अगर वो हमारे बारे में कुछ बातें ख़ुद गढ़ लेता — ल-अख़ज़ना मिन्हु बिल्-यमीन — तो हम उसे दाएँ हाथ से पकड़ लेते — सुम्म ल-क़त'अ्ना मिन्हुल्-वतीन — फिर हम उसकी शह-रग काट देते — फ़-मा मिन्कुम मिन अहदिन 'अन्हु हाजिज़ीन — फिर तुम में से कोई हमें उससे रोक न सकता।'

बेटा, इसकी संगीनी महसूस कीजिए। अल्लाह अपने सबसे महबूब रसूल ﷺ के बारे में एलान कर रहे हैं: अगर ये शख़्स एक भी जुमला अपनी तरफ़ से गढ़ कर मेरी तरफ़ मंसूब कर देता, तो मैं उसकी शह-रग काट देता। और ये एलान उसी किताब में मौजूद है जिसे वो लोगों को पढ़ कर सुनाते थे — यानी उन्होंने ख़ुद ये तंबीह सर-ए-आम सुनाई। कोई झूटा अपनी ही किताब में अपने लिए ऐसी सज़ा नहीं लिखता।

और सूरह इस पर ख़त्म होती है: 'व इन्नहू ल-तज़्किरतुल्-लिल्-मुत्तक़ीन — और बेशक ये परहेज़गारों के लिए एक नसीहत है। व इन्ना ल-न'अ्लमु अन्न मिन्कुम मुकज़्ज़िबीन — और बेशक हम जानते हैं कि तुम में झुठलाने वाले हैं। व इन्नहू ल-हस्रतुन 'अलल्-काफ़िरीन — और बेशक ये मुनकिरों पर एक हसरत होगी। व इन्नहू ल-हक़्क़ुल्-यक़ीन — और बेशक ये यक़ीनी हक़ है। फ़-सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल्-'अज़ीम — तो अपने रब-ए-अज़ीम के नाम की तस्बीह कीजिए।'

बेटा, वो अजीब जुमला देखिए: ये किताब मुनकिरों के लिए एक **हसरत** बनेगी — एक ऐसा अफ़सोस जो कभी ख़त्म न हो। वही किताब जो एक दिल के लिए राहत है, दूसरे के लिए हमेशा की हसरत बन जाती है। और वही तय करता है कि आप उसके साथ आज क्या करते हैं।

इस सूरह से क्या सीखा

1. बे-ईमान ताक़त खोखले खजूर के तने जैसी है: बाहर से बड़ी, अंदर से ख़ाली, और असल हवा में चित।

2. आप उन लोगों की नस्ल से हैं जो कश्ती में बचाए गए — आपका वुजूद ख़ुद एक याद-दहानी है।

3. 'याद रखने वाले कान' की दुआ कीजिए — बहुत लोग सुनते हैं, चंद थामते हैं।

4. उस दिन कोई राज़ नहीं बचेगा — अभी ऐसे जिए कि उस नुमाइश में बचे रहें।

5. 'हिसाब देते हुए जिए, ताकि हिसाब देते हुए पहुँचें' — और याद रखिए कि 'गुज़रे हुए दिन' यही दिन हैं।

6. जुर्म सिर्फ़ ख़ुद न खिलाना नहीं है — खिलाने पर **उभारना** भी न छोड़िए; ग़रीब भी ये कर सकता है।

7. कोई झूटा अपनी ही किताब में अपने लिए शह-रग कटने की सज़ा नहीं लिखता — ये इसी की सच्चाई की दलील है।

या अल्लाह, हमें उन में बना दीजिए जो अपना नामा दाएँ हाथ में ले कर पुकारेंगे 'मेरा नामा पढ़ो' — और हमें याद रखने वाला कान अता फ़रमाइए। आमीन।